मधुबन ओमुशान्ति अंक 335 जून 2020

पत्र-पुष्प

"स्व-उन्नति निमित्त शुभ प्रेरणायें, याद पत्र"

(20-5-20)

परमप्यारे अव्यक्तमूर्त मात-पिता बापदादा के अति स्नेही, सदा अकालतख्त के आसन पर बैठ, ड्रामा की हर सीन को साक्षी दृष्टा बन देखने वाले, सदा अपनी शुभ भावनाओं की सकाश द्वारा विश्व कल्याण की सेवा करने वाली, सर्व निमित्त टीचर्स बहिनें तथा देश-विदेश के सभी ब्राह्मण कुल भूषण भाई बहिनें,

ईश्वरीय स्नेह सम्पन्न मधुर याद स्वीकार करना जी।

बाद समाचार - वर्तमान समय चारों ओर सभी अपने-अपने स्थानों पर रहते, ज्ञान योग की बहुत अच्छी स्टडी कर रहे हैं। विश्व के कई स्थानों से समाचार मिल रहे हैं कि हमें अपनी शक्तिशाली स्थिति बनाने का यह अच्छा चांस मिला है। कई स्थानों पर भाई बहिनें मन और मुख का मौन रख अच्छी तपस्या भी कर रहे हैं। इस कल्याणकारी ड्रामा ने हर एक को एकान्तवास करने तथा ज्ञान की गुह्यता में जाने वा भिन्न-भिन्न अनुभव करने का सुन्दर अवसर दिया है। दुनिया की हालातों को देखते हुए क्या, क्यों, कैसे के प्रश्नों में उलझने के बजाए नथिंगन्यु की स्मृति से फुलस्टाप की बिन्दी लगाए हमें अपनी एकरस, अचल-अडोल, खुशनुमा स्थिति बनानी है।

मीठे बापदादा अव्यक्त वतन में बैठ हम बच्चों की कितनी वन्डरफुल पालना कर रहे हैं। चारों ओर के ब्राह्मण बच्चे अमृतवेले से बापदादा की हाज़िरी का, उनकी छत्रछाया का अनुभव करते सदा बेफिकर बादशाह की स्थिति में रहते हैं। अब समय अनुसार बाबा कहते बच्चे, अपना समय, श्वांस, संकल्प और सम्पत्ति सब सफल करते चलो। यह संगमयुग का सुनहरा समय कदम-कदम में पदमों की कमाई जमा करने का है, इसे व्यर्थ-चिंतन, परचिंतन, परदर्शन, परमत, परसंग में ऐसे ही गंवाना नहीं। अब बचत की स्कीम बनाओ। जितना हमारे पास सर्व शक्तियों का स्टाक जमा होगा, उतना ही अन्तिम समय में हम विश्व की आत्माओं के लिए मास्टर सहारेदाता बन उनके सहयोगी बन सकेंगे। बोलो, हमारे सभी शुभ चिंतक भाई बहिनें, ऐसा ही लक्ष्य रख आगे बढ़ रहे हो ना! अब कोई भी साइडसीन में रुकने का समय नहीं है, अब उड़ना और उड़ाना है। बाप समान सम्पन्न और सम्पूर्ण बनना है।

देखो, कैसे रोज़ की मधुर मुरली, बाबा के महावाक्य हम सबमें कितनी शक्ति भर देते हैं। सवेरे-सवेरे ताज़ा-ताज़ा ज्ञान का भोजन खा लो, उस पर मनन-चिंतन करो, गहराई में जाओ तो वह शक्ति का रूप बन जाता है। जैसे बाबा कहते हैं बच्चे, संगमयुग पर सेवा के निमित्त बनने से जो प्रत्यक्षफल "शक्ति" की प्राप्ति होती है, उससे आत्मा इतनी शक्तिशाली बन जाती है जो जहर समान परिस्थिति पर भी विजय प्राप्त कर लेती है। बोलो, ऐसा ही अनुभव होता है ना!

अब तो बाबा कहते बच्चे, हद के प्राप्तियों की छोटी-छोटी गलियों में भटकने के बजाए बेहद में रह सदा खुशियों के सागर में समाये रहो। मनपसन्द, संकल्प पसन्द प्राप्ति का लक्ष्य नहीं रखो, बेहद की अविनाशी खुशी का अनुभव करो। अभी आपका हर संकल्प, हर बोल व कर्म यथार्थ और युक्तियुक्त हो। किसी से भी किनारा नहीं करो लेकिन बाप के सहारे का अनुभव करो और कराओ। तो समय प्रमाण बापदादा के इन गुप्त इशारों को समझकर हम सबको अपनी बहुत ऊंचे से ऊंची स्थिति बनानी है। अच्छा!

आप सबका स्वास्थ्य ठीक होगा। बापदादा की दुआओं भरी छत्रछाया के नीचे सदा सुरक्षित होंगे।

सभी को बहुत-बहुत स्नेह भरी याद...

ईश्वरीय सेवा में,

बी.के. रतनमोहिनी

ये अव्यक्त इशारे

“स्व-स्थिति से परिस्थिति पर विजय”

1) स्व-स्थिति अर्थात् अपनी अनादि स्थिति, जो भी बाप के गुण हैं उन गुणों का स्वरुप होना इसको कहते हैं स्व-स्थिति वा अनादि स्थिति। इसके लिए 4 बातें आवश्यक हैं, 1- हेल्थ, 2- वेल्थ, 3- हैपी और 4- होली। अगर यह चार बातें सदा कायम रहें तो दु:ख और अशान्ति की परिस्थितियों में भी एकरस स्थिति रह सकती है। स्व-स्थिति का स्वरुप है सदा सुख-शान्ति-आनन्द-प्रेम स्वरूप।

2) यह देह भी पर है, स्व नहीं। देह के भान में आना, यह भी स्व-स्थिति नहीं है। चेक करो सारे दिन में स्व-स्थिति कितना समय रहती है? क्योंकि स्व-स्थिति व स्वधर्म सदा सुख का अनुभव कराता है और प्रकृति-धर्म अर्थात् पर-धर्म या देह की स्मृति किसी-न-किसी प्रकार के दु:ख का अनुभव कराती है। स्व-स्थिति में रहने वाला सदा सुख का अनुभव करता है, उसके पास दु:ख की लहर नहीं आ सकती है।

3) अगर स्वस्थिति शक्तिशाली है तो उसके आगे पर-स्थिति कुछ भी नहीं है। प्रकृति के भी मालिक आप हो, आपके परिवर्तन से प्रकृति का परिवर्तन होता है। इस समय आप सतोप्रधान बन रहे हो तो प्रकृति भी तमो से सतो में परिवर्तन हो रही है। आप रजोगुणी बनते हो तो प्रकृति भी रजोगुणी बनती है।

4) स्वस्थिति में स्थित रहने वाला कभी कोई परिस्थिति से घबराता नहीं है क्योंकि पावरफुल कभी कमजोर से नहीं घबराता। तमोगुण पावरफुल नहीं, सतोगुण पावरफुल है। तो नॉलेजफुल वा त्रिकालदर्शी कभी घबरा नहीं सकते। सदा ही किसी भी परिस्थिति में मुस्कराते रहेंगे। हर्षित होंगे, जो हर्षित होंगे वह साक्षी होकर खेल देखेंगे, आकर्षित नहीं होंगे।

5) परिस्थितियां और ही महावीर बनाती हैं, अनुभव की अथॉरिटी बढ़ती जाती है। अगर एक बार भी कमजोरी को धारण किया तो एक कमजोरी आना माना सब कमजोरियों का आना। एक भूत आया तो सभी भूत आ जायेंगे। चाहे विशेष रूप में कोई एक भूत हो लेकिन छिपे हुए सब भूत आते हैं इसलिए अभी भूतों से मुक्त बनो।

6) कोई भी सेवा की, संगठन की, प्रकृति की परिस्थिति स्वस्थिति को वा श्रेष्ठ स्थिति को अगर डगमग करती है तो यह बन्धनमुक्त स्थिति नहीं है, इस बन्धन से भी मुक्त बनो। पुरानी दुनिया में पुराने अन्तिम शरीर में किसी भी प्रकार की व्याधि अपनी श्रेष्ठ स्थिति को हलचल में लाये, इससे भी मुक्त बनो। एक है व्याधि आना, एक है व्याधि हिलाना। तो आना - यह भावी है लेकिन स्थिति हिल जाना - यह बन्धनयुक्त की निशानी है।

7) ऐसे नहीं सोचो यह तो होता ही रहता है। संकल्प बहुत बार करते हो लेकिन संकल्प दृढ़ हो। जैसे फाउन्डेशन में पक्का सीमेन्ट आदि डालकर मजबूत किया जाता है, अगर रेत का फाउन्डेशन बना दो तो कितना समय चलेगा? तो जिस समय संकल्प करते हो उस समय कहते करके देखेंगे, जितना हो सकेगा करेंगे। दूसरे भी तो ऐसे ही करते हैं। यह रेत मिला देते हो इसीलिए फाउन्डेशन पक्का नहीं होता। दूसरों को देखना सहज लगता है। अपने को देखने में मेहनत लगती है। अगर दूसरों को देखने चाहते हो, आदत से मजबूर हो तो ब्रह्मा बाप को देखो।

8) सरकमस्टांस भले कैसे भी हों लेकिन निश्चयबुद्धि बच्चे सरकमस्टांस में अपनी स्वस्थिति की शक्ति से सदा विजयी अनुभव करेंगे। उनकी माया से हार कभी हो नहीं सकती। चाहे दुनिया वाले लोग वा ब्राह्मण परिवार के सम्बन्ध सम्पर्क में दूसरा समझे वा कहे कि यह हार गये, लेकिन वह हार नहीं है, जीत है।

9) एक है अपनी स्वस्थिति में रहना। दूसरा है कारोबार में आना। स्वस्थिति में तो सभी बड़े हो कोई छोटा नहीं। कारोबार में निमित्त बनाना ही पड़ता है, इसलिए कारोबार में सदा सफल होने का स्लोगान है रिगार्ड देना, रिगार्ड लेना। दूसरे को रिगार्ड देना ही रिगार्ड लेना है। देने में लेना भरा हुआ है।

10) सर्वशक्तिवान बाप के बच्चे मालिक बनो, राजा बनो। कमजोर अर्थात् अधीन प्रजा। मालिक अर्थात् शक्तिशाली राजा। तो आह्वान करो मालिक बन करके। स्वस्थिति के श्रेष्ठ सिंहासन पर बैठो। सिंहासन पर बैठ करके शक्ति रूपी सेवाधारियों का आह्वान करो। आर्डर दो। हो नहीं सकता कि आपके सेवाधारी आपके आर्डर पर न चलें। स्वस्थिति ही सेवा की उन्नति के लिए सहज सिद्धि वा सहज साधन है। स्व की उन्नति के बिना सेवा की उन्नति अविनाशी, निर्विघ्न नहीं बनेगी। इसलिए दोनों का बैलेन्स हो।

11) जो सदा समर्थ हैं वे कभी परिस्थितियों में डगमग नहीं होते। जैसे विमान द्वारा उड़ते हुए कितने पहाड़, कितने समुद्र पार कर लेते हैं, क्योंकि ऊंचाई पर उड़ते हैं। तो ऊंची स्थिति से सेकेण्ड में पार कर लेंगे। ऐसे लगेगा जैसे पहाड़ को वा समुद्र को भी जम्प दे दिया। मेहनत का अनुभव नहीं होगा।

12) स्मृति में रहने से समर्थी आती है। अगर समर्थी होगी तो कोई भी परिस्थिति स्वस्थिति को डगमग नहीं करेगी। परीक्षाओं को एक खेल समझकर चलेंगे। अगर नाटक वा खेल में किसी प्रकार की परिस्थिति देखते तो डगमग होते हैं क्या? कोई मरे व कुछ भी हो लेकिन स्थिति डगमग नहीं होगी क्योंकि समझते हैं यह खेल है। ऐसे ही परिस्थितियों को एक पार्ट समझो। परस्थिति के पार्ट को साक्षी हो देखने से डगमग नहीं होंगे, मुरझायेंगे नहीं, मजा आयेगा। मुरझाते तब हैं जब ड्रामा की प्वाइन्ट को भूल जाते हैं।

13) निश्चय बुद्धि निश्चिंत, व्यर्थ चिन्तन से मुक्त। परिस्थिति से किनारा कर लो तो स्व-स्थिति श्रेष्ठ बन जायेगी। फिर स्वचिन्तन में रहेंगे और जो स्वचिन्तन में स्थित रहता है वह सदा सुख के सागर में समाया हुआ रहता है। जब बाप सुख का सागर है तो बच्चे मास्टर सुख के सागर हुए। संकल्प में भी दु:ख की लहर न आये। बाप की याद सबसे बड़ी ते बड़ी सेफ्टी है।

14) कोई भी परिस्थिति में बाप को सामने लाने से, स्वस्थिति के आधार से परिवर्तन हो जायेगी। चाहे कितने भी देश के हालात नाज़ुक हों लेकिन आप सदा कमल पुष्प के समान बाप की छत्रछाया में न्यारे और प्यारे रहो। बाप को याद किया और साथ अनुभव किया, जब तक स्व स्थिति शक्तिशाली नहीं होगी तो परिस्थिति के ऊपर विजय नहीं होगी। परिस्थितियाँ आयेंगी और चली जायेंगी, स्वस्थिति सदा आगे बढ़ायेगी।

15) कोई भी परिस्थिति आये तो आप हाई जम्प दो, इससे पार हो जायेंगे परिस्थिति आना भी गुड-लक है। यह पेपर फाउन्डेशन को मज़बूत करने का साधन है। यह निश्चय को हिलाकर देखने के लिए आते हैं। एक बारी अंगद समान मज़बूत हो जायेंगे तो यह नमस्कार करेंगे। विकराल रूप से आयेंगे और फिर दासी रूप से आयेंगे। चैलेन्ज करो हम महावीर हैं। पानी के ऊपर लकीर ठहरती है क्या? आप मास्टर ज्ञान सागर के ऊपर कोई परिस्थिति वार कर नहीं सकती। लकीर डाल नहीं सकती।

शिवबाबा याद है ? *ओम् शान्ति* 1999 *मधुबन*

"अपने समय, संकल्प और बोल के बचत की स्कीम बनाओ, यही अन्तिम तैयारी है"

(दादी गुल्जार)

बाबा कहते हैं बच्चे आप खुशी में नाचो। पांव का नाचना तो किसी को आयेगा, किसी को नहीं, वह भी सदा नाच नहीं सकते हैं। यहाँ बाबा तो कहते कि सदा नाचो, तो यह है मन की खुशी का नाचना। मन में खुशी होगी तो वह अपने एक्शन के द्वारा दिखाई देगी। और खुशी ऐसी चीज़ है जो मनुष्य को कहाँ से भी मिल नहीं सकती है। ऐसा कोई दुकान होगा जहाँ सदाकाल की खुशी मिले? बाबा हमको सदाकाल की खुशी का खजाना देते हैं, खुशी सदा साथ रहें, ऐसी खुशी बाबा कितनी सहज देता है। लोग तो टेम्प्रेरी खुशी के लिए कितना कुछ खर्चा करने के लिए भी तैयार होते हैं। लेकिन हमको बिना कौड़ी खर्चे के बाबा ने सदा की खुशी दी है क्योंकि अविनाशी बाबा अविनाशी चीज ही देगा। तो बाबा ने इतनी अविनाशी खुशी और अखण्ड, अटल ऐसी खुशी दी है जो हमारे पास कभी दु:ख की लहर नहीं आ सकती। जहाँ खुशी होगी, वहाँ दु:ख नहीं होगा और जरा भी दु:ख की लहर आई तो खुशी गुम हो जायेगी। तो खुशी कभी भी गुम होनी नहीं चाहिए क्योंकि यह अविनाशी बाबा का, अविनाशी खुशी का वर्सा बार-बार नहीं मिलता है। तो हम अपने आपसे पूछे अगर कोई भी प्रकार की परिस्थिति आती है तो उसमें हमारी खुशी गुम तो नहीं होती है। परिस्थितियां तो आयेंगी ही। परिस्थिति माना पेपर इसलिए इसको आप और कुछ नहीं समझो यह एक हमारे लिए पेपर है और पेपर में जो परीक्षा दे करके अच्छे मार्क्स लेंगे वह आगे क्लास में जायेंगे। और जो पढ़ाई में कच्चे होंगे वह पेपर (परिस्थितियों) से डरेंगे।

ब्रह्मा बाबा के सामने भी पेपर आये और फर्स्ट नम्बर में पास हो गये, यह हमारे सामने प्रैक्टिकल प्रुफ है। पेपर हमको और ही पक्का बनाता है इसलिए इससे कभी घबराना नहीं है। कोई ऐसे हैं जो छोटे से पेपर से भी प्रभावित होते हैं, तो कभी खुशी कभी गम के वश हो जाते हैं। बाबा तो कहते हैं अभी तो शेर आना है जब चूहे बिल्ली से घबरा गये तो शेर के आगे तो पहले ही सो जायेंगे, फिर क्या होगा? इसलिए परिस्थिति या कोई बात में अपने को मुँझाना नहीं है क्योंकि बाबा ने हमको ज्ञान और योग के पंख लगा करके उड़ती कला की बाज़ी सिखाई है, तो जिन्हें उड़ना आता है वह हिमालय जितनी बड़ी परिस्थिति को भी सहज पार करेंगे। जब ऊंचे उड़ जायेंगे तो कितनी भी बड़ी परिस्थिति हो वह हमको छोटी सी लगेगी। इसलिए बाबा कहते कि जब ऐसी कोई बात आये तो उड़ जाओ। तो अभी ऊंचा उड़ना सीखो लेकिन इसके लिए अपने पंखों को शक्तिशाली बनाओ। पंख कहीं ढीले न हों वा कहीं पंख चिपके हुए न हो, नहीं तो परिस्थिति के वश हो जायेंगे। फिर तो पास हो ही नहीं सकेंगे। इसलिए पहले अपने पंखों को चेक करो - ज्ञान और योग की मेरी दोनों ही सबजेक्ट जो हैं वह ठीक हैं? जब मैं उड़ना चाहूँ तब उड़ सकता हूँ? क्या सिर्फ यही समझता हूँ कि मैं उड़ सकता हूँ और समय पर धोखा खाता हूँ? तो हमारे ज्ञान की तलवार की धार बड़ी तेज होनी चाहिए और इस ज्ञान की तलवार को केवल म्यान में ही रख करके खुश न हो जाओ बल्कि हमेशा अपनी इस तलवार को देखते रहो तो समय पर काम में आ सकेगी।

अन्त में तो यह पांचों तत्व आंधी, तूफान, आग, पृथ्वी का हिलना यह सब इकट्ठा काम करेंगे तो सोचो उस समय हमारी कैसी स्थिति होनी चाहिए? अभी तो फिर भी ठीक है, कहीं कुछ, कहीं कुछ होता है तो एक दो के सहारे से, स्थान के सहयोग से अपने को फिर भी बचा रहे हैं। लेकिन जब पांच तत्व ही एक साथ काम करेंगे तो अन्त में ऐसा कोई सहारे का स्थान मिलेगा? नहीं। उस समय तो हमारी यही तैयारी काम आयेगी कि फरिश्ता बनके उड़ जायें, बस। तो उसके लिए अभी से अशरीरी बनने का अभ्यास चाहिए। अशरीरी माना शरीर में होते हुए भी शरीर का भान न हो। शरीर के सम्बन्ध वा पदार्थों के तरफ बार-बार मन का खिंचाव न हो। इसके लिए जितना समय चाहे, जहाँ चाहे उतना समय हमारा मन वहाँ ही रहे, यह अभ्यास चाहिए और यह अभ्यास सारे दिन में भी बीच-बीच में करते रहना चाहिए।

अभी-अभी बॉडी कान्सेस, अभी-अभी सोल कान्सेस और अभी-अभी बाबा की याद। बहुतकाल युद्ध के अभ्यासी होंगे तो चन्द्रवंशी में पहुँचेंगे। फिर पहले युग का सुख तो ले ही नहीं पायेंगे। तो ब्रह्माकुमार बनके क्या किया? बी.के. बने हैं तो बाबा से पूरा वर्सा लेना चाहिए। अगर योग में मेहनत वा युद्ध है तो कर्मातीत वा अशरीरी स्थिति का अनुभव नहीं कर सकेंगे। फिर अन्त में आप युद्ध में ही जायेंगे क्योंकि अन्तकाल तो किसका पूछकर नहीं आयेगा। अचानक ही सब कुछ होने वाला है। इसलिए बाबा ने कहा एवररेडी रहो। तो एक अचानक और दूसरा एवररेडी - यह दोनों ही बातें सदा याद रहना चाहिए क्योंकि सब अचानक होने वाला है। तो जो एवररेडी रहेंगे वही पास होंगे। कल क्या होगा, कुछ भी हो सकता है, इतना एवररेडी हमको रहना चाहिए। इसके लिए मम्मा का एक फेवरेट स्लोगन था कि हमारी अन्तिम घड़ी कैसी होगी? हर घड़ी अपनी अन्तिम घड़ी समझो तो अन्तिम घड़ी में और कोई बात याद नहीं हो। अभी जा रहे हैं तो कुछ अच्छे कर्म करके जावें, तो अच्छा है। ऐसे ही हम लोगों को एवररेडी रहना चाहिए, कभी भी कुछ भी हो सकता है लेकिन मैं रेडी हूँ? मैं सेकण्ड में उड़ सकती हूँ या टाइम लगेगा! बाबा को उल्हना देंगे या बाबा से मदद मिलने लिये बाबा को याद करेंगे। लेकिन बाबा ने कहा है कि हिम्मत वाले को मदद मिलेगी। हिम्मत माना योग ठीक हो, विजयी हो। विजयी को मदद नहीं मिले, यह नहीं हो सकता है।

बाबा ने कहा है जो मेरे को सदा साथी बनाकर रखता है, उसको साथ देने के लिए मैं बंधा हुआ हूँ। तो कई ऐसे हैं जो कोई मतलब या स्वार्थ होगा तो कहेंगे बस बाबा, आपके सिवाए कोई नहीं और जब कोई बात आयेगी तो कहेंगे बाबा आप तो परमधाम में बैठे हो मैं तो यहाँ बैठा हूँ.... तो ऐसा नहीं करना है। कई हैं जो मतलब की बात याद रखते हैं और जो अटेन्शन की बात है वह भूल जाते हैं। कई तो फिर बाबा के ही मास्टर बन बाबा का पेपर लेते हैं, तो ऐसे नहीं करना है। अपनी उन्नति के लिए अमृतवेला, क्लास तो नियम अनुसार करना ही है, लेकिन इसके अलावा अपनी जो ड्यूटी है वह करते भी यह अभ्यास का क्रम चलता रहे। ऐसे नहीं कि कर्म किया फिर याद किया तो भी लिंक तो टूट गया। इसलिए काम करते हुए भी कर्म कान्सेस की स्मृति से परे रहकर निरन्तर बाबा के याद की लिंक में ही रहने की आदत डालनी है। जहाँ जितना समय मिले, उतना वहाँ याद का लिंक जारी रखें तब ही हम 8 घण्टा याद कर सकते हैं। इसके लिए याद का टाइम बॉक्स बनाओ। एक-एक मिनट करके 10 मिनट हो जायेंगे तो हमारी लिंक जुटी रहेगी, इससे खुशी भी सदा होगी।

हर घण्टे में 5 मिनट, 2 मिनट जितना समय निकाल सकते हो, उतना निकालने का अभ्यास करके बाबा को याद करो तो उसका इतना ही प्रभाव फिर बढ़ते-बढ़ते बढ़ता रहेगा। फिर बीच-बीच में चेक भी करो कि हमारा सारे दिन में याद का लिंक जुटा रहा? निरन्तर याद का अभ्यास बढ़ाओ तो अन्त में इसकी मदद मिलेगी। अगर लिंक टूट गया फिर जोड़ने में टाइम लगेगा तो एकरस वा कर्मातीत स्थिति का अनुभव चाहते हैं नहीं होगा, युद्ध में समय जायेगा, योग नहीं लगेगा। तो आप योगी हो या योद्धे हो? टाइम तो कभी वापस आता नहीं है। इसलिए अभी व्यर्थ तो छोड़ो परन्तु फालतू संकल्प भी नहीं चलाओ। उसने लड़ाई की और हमने फालतू सोचा तो दोनों ही रांग हुए। फायदा कुछ नहीं। हाँ, कुछ कर सकते हो या आपकी कोई जिम्मेवारी है तो सोचो और उस समय कुछ नहीं बोलो, बाद में ही उन्हें कुछ अपना सोच बताओ तो अच्छा है, नहीं तो आपके सोचने और उन्हें उस समय कुछ सुनाने से कोई लाभ नहीं निकलेगा। जैसे दवाई देने का भी समय फिक्स होता है, ऐसे समय देख शिक्षा दो। तो क्यों, क्या के फालतू संकल्पों में अपना समय, संकल्प, बोल नहीं गंवाओ। उसको टी.बी. की बीमारी है और आपको बुखार है, हैं तो दोनों ही बीमार ना। तो फालतू सोचने की जिम्मेवारी किसने दिया? अपना ही पूरा पुरुषार्थ नहीं हो रहा है तो दूसरों की बातों को सोचने से फायदा? कुछ नहीं।

और कईयों का बोल भी ऐसा मज़ाकी होता है, फालतू बोल... वह समझते हैं कि हम बहुत खुश हैं लेकिन ऐसे बोल और ऐसी खुशी, फालतू सोच क्या काम के, इस फालतू बोल को भी बचाओ क्योंकि हम अभी अलौकिक हैं। तो हमारा हँसी-मज़ाक भी ज्ञानी तू आत्मा का होना चाहिए। अगर आप ऐसे फालतू को बचाने लगेंगे तो आपको पुरुषार्थ करने के लिए काफी समय मिल मिलेगा। तो चेक करो आज मैंने फालतू बोल कितने बोले? ऐसे ही बोला, व्यर्थ भी नहीं फालतू भी नहीं बोला.. तो फिर ऐसे ही क्या होता है! इसलिए अपना अटेन्शन रखो, अपने अन्दर का चार्ट रखो क्योंकि बाबा न कहा है कि आजकल विघ्न भी फालतू के ही आते हैं। और जो ज्यादा बोलते हैं वह गलती बहुत करते हैं। अपने बोल की एनर्जी को बचाओ तो अपनी बहुत उन्नति कर सकते हो। यही अन्तिम तैयारी करनी है, उसके लिए अपने समय, संकल्प और बोल के बचत की स्कीम बनाओ तो आप अन्तिम घड़ी में पास हो सकते हो। नहीं तो हालतें ऐसी होगी जो मन फौरन व्यर्थ तरफ चला जायेगा

क्योंकि मन को व्यर्थ में जाने की आदत है। इस तरफ यह हो रहा है, उस तरफ वह हो रहा है। तो यह वह देखने और सोचने में ही टाइम चला जायेगा, अशरीरी नहीं हो सकेंगे। अशरीरी होंगे तो बचाव होगा क्योंकि उस समय हालत बहुत दर्दनाक होगी। अपने ही कोई सम्बन्धी चिल्ला रहे हैं, अगर मोहजीत नहीं होंगे तो उसी में ही बुद्धि जायेगी, इसको बचाऊं उसको यह करूँ। बचाओ जरूर लेकिन बाबा की याद में बचाओ, ऐसे नहीं यह ऐसा क्यों हुआ, यही नहीं सोचते रह जाओ। जब इस प्रकार के कोई भी फालतू संकल्प चलते हैं तो क्यों, क्या, कैसे, कब और कौन - इन पांच शब्दों में से कोई एक शब्द जरूर होता है। तो माया की तरफ से अगर यह पांच शब्द आ गये और कैं कैं करने लगे तो कौवे बन गये। और अगर ज्ञान की रीति से इन्हीं पांच प्रश्नों के आधार पर मनन करो तो आप नम्बरवन भाषण वाले बन सकते हो। इसीलिए इन पांच शब्दों को कभी भी निगेटिव अथवा बुरे रूप से नहीं यूज़ करना। मनन करके अच्छे रूप से यूज़ करो। इन पांच शब्दो से कोई भी प्वाइन्ट का मनन कर सकते हो। अभी तो निगेटिव को पॉजीटिव में परिवर्तन करने की शक्ति धारण करनी ही पड़ेगी तभी लास्ट में पास हो सकते हो। तो नम्बरवन बनने का आधार भी यही है कि परिवर्तन की शक्ति को यूज़ करके अशरीरी बनने का अभ्यास करते रहना। अच्छा।

"बाबा के प्यार का अनुभव करना है तो आत्मा को शान्त रहना सिखाओ, क्या, क्यों के सोच में नहीं जाओ"

(दादी जानकी)

कोई तीन दिन भी स्वयं को अच्छी तरह से देखे, फिर बाबा को देखे तो बहुत सहज परिवर्तन हो सकता है। मुख्य-मुख्य बातें जो ध्यान पर रखने वाली हैं, मुझे वह करनी है। तो समय को वरदान मिला हुआ है और बाबा भी इतना सहज कर देता है जो मेहनत करने की जरूरत ही नहीं है। समय अनुसार मेरी इच्छा है सम्पन्न बनने की, तो जो कमी है और किसी के ध्यान में आने के पहले मेरा ध्यान जाना चाहिए। मेरा पर्सनल ध्यान जाता है। बुद्धि क्लीन और लाइन क्लीयर हो, यह रॉयल्टी है। बुद्धि के अन्दर कोई भी मिक्सचर, किचड़े वाली बात नहीं होनी चाहिए। अगर है तो बुद्धि राइट टाइम पर राइट काम नहीं करती है - न सम्बन्ध में, न सेवा में, न पुरुषार्थ में। यह हमारा वरदानी युग है, वरदाता बाबा है, दोनों का फायदा लेना है। हरेक कहता है समय बड़ा बलवान है। सबको पता है हर मिनट में 60 सेकेण्ड होते हैं। बाबा ने सेकेण्ड-सेकेण्ड कैसे सफल हो, यह सिखाया है। एक सेकेण्ड भी व्यर्थ गया तो कितने समय की कमाई गयी। इतना ध्यान रखें।

परचिन्तन, परदर्शन, परदोष, परसंग। अन्दर से देखेंगे यह सब आपस में इकट्ठे हैं। उनको संग भी कुदरती ऐसों का मिलेगा जो परचिन्तन, परदर्शन और परदोष वाला होगा। इन तीनों से फ्री होने के लिए हम किसी के संग में न आयें, किसी का प्रभाव या दबाव असुल न हो। मुझे बाबा ने जो सिखाया है वो भले उसको मिले। पर उनका जरा भी मुझ आत्मा पर प्रभाव दबाव न हो। किसी ने भी यह ज्ञान नहीं दिया कि आत्मा में मन बुद्धि संस्कार हैं। आत्मा शरीर से अलग है, आत्मा निर्लेप है। आत्मा परमात्मा एक है - यही गड़बड़ घोटाला कर दिया है। अभी हम सबका मन भटकने से छूट गया क्योंकि भगवान ने कहा मन मेरा है, बुद्धि में ज्ञान भरा, इससे फिर संस्कार चेंज होते हैं। यह ज्ञान हमको है, यूज़ करें। स्वप्न, संकल्प, स्वभाव यह तीनों संस्कारों के वश हैं। अभी हमारे जो स्वप्न हैं, स्वभाव है, संकल्प हैं तीनों आपस में मिले हुए हैं। इन तीनों में परिवर्तन चाहिए। आजकल इतना लोगों को रिगार्ड है जो हमको स्वप्नों में देखते हैं। लेकिन अगर मेरे ही स्वप्न में कुछ ईर्ष्या, द्वेष होगा तो बाबा का जो अनुभव हो, वो नहीं होगा। हमारे स्वप्न में बाबा हो या मैं बाबा के साथ रहूँ। अगर मैं कोई स्वभाव के वश हूँ तो मेरे स्वप्नों में बाबा नहीं है। किसी के स्वप्नों में मैं बाबा की याद दिलाऊं, नहीं हो सकता। स्वप्न, संकल्प और स्वभाव। जरा भी हम किसी स्वभाव के वश हैं तो वो संस्कार कभी चेंज नहीं होते हैं। अगर मेरे संस्कार चेन्ज नहीं होते हैं तो मेरे साथ जो व्यवहार करने वाले हैं, उनको मैं चेन्ज होने में मदद नहीं कर सकती हूँ, पर मैं भी उनके वश हो जाती हूँ। इतना हमारे स्वप्न, स्वभाव और संकल्प संस्कारों के वश हैं। पर तीनों बातों पर ध्यान रखें तो संस्कार ईश्वर की सन्तान के हो जायेंगे।

दिल, दिमाग और दृष्टि यह तीनों इकट्ठा काम करते हैं। जो मेरे दिल में है वो दिमाग में है, वही दृष्टि में है। हमारी दृष्टि में रहम, स्नेह, सच्चाई ऐसा हो जो हर एक समझे कि मुझे बड़ी शान्ति और प्यार मिला। लोग शान्ति के भिखारी हैं, प्रेम के प्यासे हैं। अगर ये दो चीजें हमारे पास हैं, दाता, वरदाता, भाग्यविधाता बाप ने हमें दी हैं तो हम दूसरों को भी दे सकते हैं।

कोई भी बात मुझे नीचे नहीं ले आये, बाबा बड़ा या बात बड़ी? बातें मुझे नीचे ले आयें। मैं नीचे रहूँ, बाबा ऊंचा रहे। कभी भी सारी हिस्ट्री में याद नहीं आता कि मैंने कभी रोया हो। मैं रूठ जाऊं, कोई मुझे मनाने के लिए आये। ये कोई शान है! जिसका स्वभाव रुठने

का रहा है वो शरीर छोड़ने तक भी नहीं गया है। कहते हैं ना कि ये तुम्हारी बात मेरे को अच्छी नहीं लगती है। ये मैंने क्या बोला! इसको भी अहंकार कहा जाता है। ये मेरा बोलना उसको अच्छा लगेगा क्या! तुम आपेही अच्छा करते चलो।

स्वभाव अर्थात स्व की भावना सच्ची और भाव श्रेष्ठ रखना है। तो संस्कार आटोमेटिक, सच्ची भावना और श्रेष्ठ भाव वाला बन जाता है। हमारा बनेगा तो ये कलम लगेगा। अनेक बातों में अपने पुरुषार्थ से कई एक दो से आगे गये हैं, ऐसे गद्दी छीन के नहीं बैठे हैं।

साक्षी होकर बाप को साथी बनाके चलते चलो। हमारे बोल इतने कीमती हों, साक्षी होकर पार्ट बजायें। हमारे बोलने या कोई की बात दिल में रखने से कोई चेन्ज नहीं होता है और ही हमारे दिल में उनके लिए प्यार खत्म हो जाता है।

हरेक के दिल से निकले कि ये तो मेरे इष्ट देव हैं, तो वो अष्ट रत्न में आयेगा। बाबा की उम्मींदे हमारे में क्या हैं, ब्राह्मण परिवार की भावना हमारे लिए कैसी है। दुनिया वाले तो बिचारे भिखारी हैं, ऐसा उन्हें कोई सुखदेव-सुखदेवी मिले। हमारा दिमाग सदा ठण्डा रहे, कभी गरम न हो, दिल सच्ची, स्वभाव सरल हो। बड़ी बात नहीं है, सिर्फ यह एम हो कि ये मुझे करना है।

कई कार्य होते हैं जिनके लिए बाबा कहते हैं कि हो जायेगा, बस एम रखनी है। कई कार्य ऐसे होते हैं, बाबा कहते हैं सोचो मत। सोच में ही नुकसान है। विचारधारा और तरफ चली गई। विचार करने की, समेटने की, समाने की जो शक्ति थी वो मिस की। फायदा क्या हुआ! मूंझे हुए, घबराये हुए, पता नहीं ये न हो जाये…! कुछ नहीं होगा। याद ऐसी हो तो सब अच्छा होगा। ऐसे नहीं कि इसे यह नहीं करना चाहिए था, ऐसा क्यों हुआ, ऐसा क्यों किया…. ये जो सोच चला ना, ये भी गलत आदत है। ऐसा सोचना बहुत बुरी बला है, जरूरत नहीं है। बाबा ने आत्मा को शान्त रहना सिखाया है। शान्त रहने से प्यार मिला है। अशान्त रहने से प्यार नहीं ले सकते हैं। अगर मैं शान्त न रहूँ तो भगवान को याद कैसे करूँ। जो कभी दु:ख फील करते हैं वो क्या बाबा को याद करेंगे। किसी घड़ी दु:ख या अपमान फील करना, तो देह के भान से परे कैसे रहेंगे। याद माना देह के भान से परे, विदेही स्थिति, कारोबार में न्यारी स्थिति। सिर्फ व्यर्थ को बीच में एलाऊ न करें। पास्ट को प्रेजेन्ट में करेंगे तो पास्ट छोड़ेगा नहीं। आगे बढ़ नहीं सकेंगे। तो पास्ट न मेरी, न किसी की। कुछ भी पास्ट याद है तो दूसरों को मदद नहीं कर सकेंगे। पास्ट को पास नहीं किया तो दूसरे को मेरी पास्ट प्रेजेन्ट में दिखाई देगी। लोग हमें देखें तो कहें कि कल क्या थे और आज क्या हैं! यह तब होगा जब अपनी नेचर नैचुरल बनायेंगे। बाबा साथ है और साक्षी होकर पार्ट प्ले करने की कला आ जाये, हरेक का पार्ट अपना है। अच्छा।

दादी प्रकाशमणि जी के अमृत वचन

“संगमयुग की विशेषता - सदा बेफिक्र बादशाह रहना”

1) हम सब हैं बेफ़िक्र बादशाह बाबा के बच्चे–सदा बेगमपुर के बादशाह। कई लोग मेरे से यह सवाल पूछते हैं कि दादी आपको कोई फ़िकर होता है? क्योंकि जानते तो हैं कि आखिर इतने बड़े कार्य-व्यवहार की कई बातें होती हैं। रोज़ की अनेक बातें हर मिनट में आती जाती हैं। कई बार तो एक में दूसरी, दूसरी में तीसरी बात आती तो फ़िकर तो रहना चाहिए ना! परन्तु बाबा का मुझे यह सचमुच पर्सनल वरदान है कि हमें न कोई भी फ़िकर होता, न कोई चिन्ता होती, न कोई चिन्तन चलता – इसका कारण है कि हम निमित्त हैं। फ़िकरात करने वाला करे, मैं क्यों करूँ? मेरी कोई रचना है – क्या जो मैं करूँ! तेरी रचना है तू उनका फ़िकर करो, मुझे आप कहते हो कि यह कार्य करो तो मैं करती हूँ। तू कराने वाला है, हम निमित्त हैं। अच्छा है तो भी आप बैठे हो, रांग हुआ तो भी आप जवाबदार हो? तो फ़िकरात किसकी? कोई बात है प्लान करो, राय करो – कैसे करें, क्या करें लेकिन चिन्ता किस चीज़ की! चिन्ता चिता के बराबर है। हम कभी चिन्ता करते नहीं। आप लोगों ने कभी देखा है? फिकर से फारिग कींदा स्वामी सद्‌गुरु। तो फ़िकर वह करे हम क्यों करें। तो संगमयुग की विशेषता है - बेफ़िक्र बादशाह बनो।

2) आप सभी बापदादा के दिलतख्त पर बैठ जाओ तो किसी चीज़ का फ़िकर नहीं होगा। जो खिलावे, सो खाना है, जो पहनावे सो पहनना है, अगर उसे हमें बेगरी पार्ट में रखना होगा तो भी हम उसमें राज़ी, अगर हमें राजकुमारों की तरह पालेंगे तो भी राज़ी हैं। बाकी किस चीज़ की चिन्ता! बाबा कहता है सर्विस करो, हम कहते हैं करो। बाबा ने इशारा किया, ज्ञान सरोवर के लिए जमीन लो, एकॉडमी बनाओ, जो आज्ञा… बस, इसके आगे कुछ नहीं। मैंने कहा - बाबा भोलानाथ आप हो, भण्डारी आपकी है, भण्डारी में क्या है, वह आप जानते हैं, आप खिलाते हैं, हम खाते हैं। तो बाबा क्या कहता - हाँ बच्ची, बाबा बैठा है आप बनाओ। तो कोई ने पाँच रुपया भी भेजा, कोई ने पाँच हजार भी भेजा तो कोई ने कुछ भी भेजा। बाबा के लाख बच्चे हैं। कैसे-कैसे गरीब निवाज़ बाबा ने अनेक गरीब बच्चों की पाई-पाई सफल की। फिर ऐसे ही ज्ञान सरोवर के बाद शान्तिवन बनवाया। यह प्रैक्टिकल उदाहरण है, हमें बाबा ने बेफ़िक्र बादशाह बनाया है। जितना देगा उतना बनायेंगे, जितना आज्ञा करेगा, उतना करेंगे। हमारा एक ही मन्त्र है – जी

हज़ूर हम हाज़िर हैं। वह हज़ूर है, जो हुक्म करे। बाकी चिन्ता क्या करूँ! तो फिर आप लोग क्यों चिन्ता करते? किस बात की फ़िकरात करते? बस यही कहेगा ना सूखा रोटला खाओ तो भी खायेंगे, कहेगा 36 प्रकार का खाना खाओ तो भी खायेंगे। हमारे लिये दोनों बराबर हैं। ऐसे भी कई योगी होते हैं, गुफ़ा में रहते हैं, एक-एक मास पानी पर रहते हैं, कोई टाइम आयेगा तो हम भी पानी पर रह लेंगे। अभी तक तो नहीं आया है। तो कहने का भाव है फ़िकर से फ़ारिग रहो। एकदम सब फ़िकरात त्याग करके जाओ। जो आवे जैसा आवे, जो खिलावे जहाँ जैसे सुलावे, सबमें सन्तुष्टमणी बनो। सन्तुष्टमणी रहो। खुश रहो, खुशी की खुराक खाओ। दिलखुश मिठाई खाओ, बस।

3-) दूसरी फिकरात किस चीज़ की आती? कभी-कभी आपस में संगठन में रहते, थोड़ा बहुत भाव-स्वभाव आता, थोड़ा चिन्तन चलता – इसकी भी विधि सीखो। आप आपस में दो लोग रहते आपकी आपस में नहीं बनती, आप कहते हैं यह बुरा, वह कहता यह बुरा, अच्छा यह भी बुरा, यह भी बुरा। लेकिन कोई तो अच्छाई होगी या नहीं होगी? तो अच्छाई से बात करो ना। तो जब तुम अच्छाई वाले से बात कर लेंगे तो बुराई आपेही खत्म हो जायेगी। बुराई को देखकर बात नहीं करो, उसके बदले अच्छाई देखकर बात करो तो बुराई आपेही खत्म हो जायेगी, जिसको बाबा कहते तुम शुभ-भावना रखो तो शुभ भावना से कामना पूरी होती है। फिर हम किसके लिए लड़ें। मान लो संगठन है, संगठन में आपने कोई बात कही, मैंने नहीं मानी तो आपको बुरा लगा कि यह मेरी बात नहीं मानता, जिसको जिद्द कहते हैं। अच्छा कोई बात नहीं मानता, जिद्द करता आप वह बात छोड़ दो। आपेही ठण्डा हो जायेगा। आपकी भावना है उसको अच्छा बनाने की तो आप दूसरी युक्ति से मनाओ। जो राइट बात है, उसको बताना हमारा कर्तव्य है। आगे वाले का काम है मानना, फिर भी कोई जिद्द करता है तो वह उसका विकर्म बनता, हम उसके विकर्म के साथी नहीं बने। एक विकर्म करे तो मैं दूसरा विकर्म नहीं करूँ। कोई बात भले रांग दूसरे की है मेरी नहीं है, लेकिन मैंने कह दिया अच्छा भैया ओम् शान्ति, सॉरी... तो वह बात खत्म हो गई। जो टेम्परेचर चढ़ा था वह स्वत: ही डाउन हो जायेगा। मैंने सॉरी किया तो इसमें मेरी साड़ी तो मैली नहीं हो गई ना? सॉरी करने से कम से कम दूसरे का दिमाग तो ठण्डा हो गया, ओ. के. जो तुम्हारी इच्छा। जैसे तुम चाहो, बस, खत्म।

4) श्रीमत के फरमान पर चलना - यह हमारा धर्म है। धर्म कहो, आज्ञा कहो, मर्यादा कहो। तो श्रीमत क्या कहती है–वह सोचो बस। क्या श्रीमत कहती है कि आपस में लड़ो, मूड ऑफ करो, मनमत पर चलो? श्रीमत ने कहा है क्या कि किसी से लगाव रखो, ऐसा वैसा व्यवहार करो, इस-इस तरह का धन्धा करो? तो बाबा की आज्ञा में सदैव चलो। मैं कदम-कदम श्रीमत पर चल रहा हूँ - इसका चार्ट नोट करो। श्रीमत पर न चलना माना विकर्म करना। श्रीमत के अन्दर सब धारणायें आती हैं। श्रीमत कहती रोज़ मुरली सुनो, सवेरे उठो, ज्ञान-स्नान करो, मर्यादाओं में चलो, पवित्र रहो, ब्राह्मण कुल की लाज़ रखो। यह सब श्रीमत है ना। दूसरों की सर्विस करो, सभी को बाबा परिचय दो, सेवा करो यह सब श्रीमत है। तो बाबा और श्रीमत। अब श्रीमत कहती है कि आप योग की यात्रा का अभ्यास ज्यादा करो। यह है अन्तिम श्रीमत की आज्ञा, इसीलिए अब यह सब जो पुराने संस्कार हैं, उन्हें खत्म करने के लिए बाबा ने श्रीमत दी है एकाग्रता का अभ्यास करो, अशरीरी बनो। यह अभ्यास कमी-कमजोरियों को खत्म करेगा।

5) जो भी कोई संस्कारों की कमी है, इस भट्टी में उसे स्वाहा करो। दिल से रियलाइज़ करके अपनी कमजोरी को कम से कम 100 बार लिखो और बाबा से माफी लो। सभा में सुनाओ तो देह-अभिमान का संस्कार खत्म हो जायेगा। जो भी ईश्वरीय मर्यादा के विपरीत बातें होती, आपस में हंसना, बहलना, टी.वी. देखना...इन सब बातों को अब समाप्त करो। योग की कमाई करो।

6- हम ब्राह्मण कुल भूषण हैं हमारे मुख से सदैव रत्न निकलने चाहिए। कभी कुवचन नहीं निकले। कई भाईयों के मुख पर गाली झट आ जाती, जो बहुत-बहुत खराब लगता है। दो-चार गालियाँ सेकण्ड में किसको दे देंगे, एक दूसरे का गला पकडकर किसी को चाटा मार देंगे, यह हम ब्राह्मण कर नहीं सकते। क्या जिस टाइम तुमने किसी को चाटा मारा, तुम्हें दर्द नहीं हुआ? क्रोधमुक्त होने का तो सभी पक्का वायदा करके जाओ। दृष्टि-वृत्ति भी सदा पावन रहे–ऐसी सच्ची राखी बांधो। अच्छा। ओम् शान्ति।

कार्यशाला – सत्कार विषय पर ज्ञान गोष्ठी

'सत्कार' उस सुमधुर फल का नाम है जिसके रसास्वादन से आत्मा स्वयं में बहुमुखी विकास के साथ स्वयं को गौरवान्वित अनुभव करती है।

परिभाषा

1. सत्कार अर्थात् व्यक्ति के गुण, विशेषता, योग्यता, कला, पद, एज्युकेशन, डिग्री आदि के अनुसार व्यक्ति को वैल्यु देना अर्थात् उसकी कदर करना ही सम्मान देना है।
2. जितना स्वयं को मान देते हैं, उतना ही मान दूसरों को भी दें – यह है सम्मान।
3. सर्व को ऊंची दृष्टि से देखना, शुभ भावना से व्यवहार में आना ही सत्कार करना है।
4. नि:स्वार्थ और निष्काम भावना से एक दो को सत्कार दें जैसे

शिवबाबा हम बच्चों को ब्राह्मण सो फरिश्ता बनाने के लिये देते हैं।

5. हम श्रेष्ठ ब्राह्मण आत्मायें अन्य आत्माओं का कल्याण करने के निमित्त हैं–इसलिए हर एक को दिल से सम्मान दें। ब्राह्मणों की उन्नति के लिए वा सेवाओं में सफलता पाने के लिए एक दो का सम्मान करना–यही है शुद्ध सम्मान। जिस सम्मान में स्वार्थ भावना है, ऊपर-ऊपर का बाहरी दिखावा है वह है अशुद्ध सम्मान।

सम्मान की महानता व लाभः-

1. सर्व को सम्मान देना यह श्रेष्ठ आत्मा की रॉयल्टी है।
2. सर्व को सम्मान देना यह जीवन जीने की कला है, मित्र बनाने की चाबी है।
3. ब्राह्मण जीवन में उन्नति व सफलता का मुख्य साधन है सम्मान।
4. सर्व का प्यार व पुरस्कार सम्मान देने से प्राप्त होता है।
5. सम्मान देने से सम्बन्धों में समीपता व मधुरता आती है, पारस्परिक स्नेह व सहयोग की भावना बढ़ती है। पारस्परिक सम्बन्धों में पास्ट की कड़ुवाहट, मनमुटाव, टकराव, संघर्ष एवं मिस अण्डरस्टैण्डिग आदि समाप्त हो जाते हैं।
6. सम्मान से व्यक्ति के कड़े संस्कारों को सहज ही परिवर्तन कर सकते हैं। कैसे भी आपोजीशन करने वाले, अपकारी आत्मा का दिल जीतने की विधि है–दिल से, शुभ भावना से स्नेह व सम्मान देना।
7. सर्व को सत्कार व प्यार देना, यह हमारी पुरातन परम्परा एवं संस्कृति है।
8. परमप्रिय शिवबाबा ने नारी जाति को सम्मान दिया, 'वन्दे मातरम्' कहा, स्वयं को गरीब निवाज कहकर गरीबों का भी सत्कार किया। तो हम भी फालो फादर करें।
9. सत्कार के चमत्कार से बाबा विश्व परिवर्तन का कार्य हम बच्चों द्वारा करा रहे हैं।
10. सम्मान व्यक्ति के घमण्ड व अहंकार पर विजय प्राप्त करने का अहिंसक शस्त्र है।

सभी ब्राह्मण सत्कार के योग्य हैं – क्यों?

1. परमात्मा को पहचानने वाले कोटो में कोई, कोई में भी कोई, विशेष आत्मा हैं।
2. मन्दिरों में भक्तगण जिनकी पूजा-महिमा करते हैं, सर्व ब्राह्मण कुल भूषण वही होवनहार देवी-देवतायें हैं।
3. ऊंच ते ऊंच भगवान की डायरेक्ट पहली रचना हैं।
4. कलियुगी संसार में रहते हुए माया को चैलेन्ज देने वाले हैं।
5. संसार में एक सत्य धर्म व सत्य राज्य की स्थापना करने वाले महान आत्मा, धर्मात्मा हैं।
6. महात्यागी, बेहद के वैरागी व राजयोगी आत्मायें हैं।
7. सभी युग परिवर्तक, पुरुषोत्तम, दिव्य गुण मूर्त आत्मायें हैं।
8. सभी 5000 वर्ष के बाद मिले हुए ईश्वरीय परिवार के सदस्य हैं।
9. सभी बाप समान सम्पन्न, सम्पूर्ण फरिश्ता बनने वाली आत्मायें हैं।
10. भगवान के चुने हुए प्रत्येक रत्नों में अवश्य ही कोई न कोई विशेषता है, हर एक किसी न किसी बात में हमारे से ज्यादा अनुभवी हैं।

परस्पर सत्कार हेतु भावना क्या होनी चाहिये?

1. आन्तरिक शुभ भावना व शुभ कामना रखना।
2. रहमभाव, दयाभाव, समभाव, क्षमाभाव व आत्मिक भाव रखना।
3. ईश्वरीय परिवार की भावना व अपनेपन की भावना।
4. कल्याण की भावना, आगे बढ़ाने की भावना, सहयोग की भावना।
5. गुण ग्राहक दृष्टि।
6. जहाँ उदारता है वहाँ सत्कार सहज दे सकते हैं।

व्यवहारिक जीवन में सत्कार के लिये धारणा

1. स्वमानयुक्त एवं उच्च शब्दों का प्रयोग करें।
2. किसी की साधारण या उल्टी बात को तत्काल कट न करें।
3. किसी की कमजोरी को, बुराई को, गलती को फैलायें नहीं, उसे समा लें।
4. समय, परिस्थिति, व्यक्ति, स्थान एवं वायुमण्डल देखते हुए बात करने से सत्कार मिलता है।
5. हाँ जी का पाठ पक्का करें, निर्मान व नम्रचित्त व्यवहार करें।
6. दूसरों की बात को ध्यान से सुनें, बीच में रोककर स्वयं बोलना शुरू न करें।
7. सेवा की सफलता के लिये मुबारक दें।
8. अन्य से मिलते समय चेहरे पर मधुर मुस्कान अवश्य हो।
9. समय प्रमाण 'नमस्कार', 'शुक्रिया', 'माफ कीजिये' आदि शब्दों का प्रयोग अवश्य करें।
10. वाद विवाद में न जिद्द करें, न सिद्ध करें।
11. मिया मिट्ठु बन स्वयं की ही बड़ाई न करें।
12. सफलता में स्वयं व असफलता में दूसरों को दोषी न बनावें।

बापदादा के महावाक्य हैं, बच्चे सम्मान देना ही सम्मान लेना है। पहले स्वयं को सम्मान दो अर्थात् स्वयं की जो विशेषतायें हैं, जो बापदादा द्वारा मिले हुए टाइटिल हैं–उनके स्वमान में रहें। फिर नॉलेज को यथार्थ रीति से समझकर उसका सत्कार करें। ज्ञान की किसी भी पाइंट में संशय उत्पन्न न हो। ऐसे ही बाप को हर सम्बन्ध से सत्कार दें। और ब्राह्मण आत्माओं की विशेषताओं को सामने रखते हुए उन्हें भी पूरा-पूरा सत्कार दे। एक दो की कमियां वर्णन करने के बजाए उन्हें समा लें, या परिवर्तन करने के लिए उनके प्रति शुभ भावना रखें। अच्छा–ओम् शान्ति।